जैन धर्म में दिवाली महत्व [loftiness of Diwali @ JAINISM]

One of the prominent religions in India – वीर निर्माण संवत: 2537

WiSh YoU VeRy HaPpY NeW YeAr

Diwali in Jainism is the jubilation to commemorate the salvation or Moksha attained the Lord Sraman Mahavira at the dawn of the Amavasya (new moon - early next morning) – According Harivansh Purana. The chief disciple of Mahavira, Ganadhara Gautam Swami also attained complete knowledge (Kevalgyana) on this day at Evening – According Uttar Purana, thus making Diwali one of the most important Jain festivals.

दिवाली जैन धर्म में उल्लास के साथ स्मरणोत्सव के रूप में महावीर भगवान के मोक्ष प्राप्ति के लिए मनाया जाता है [कार्तिक कृष्णा अमावस - प्रत्यूष बेला] - हरिवंश पुराण, महावीर भगवान के सर्वोच्च शिष्य गणधर गौतम स्वामी ने भी इस दिन केवलज्ञान प्राप्त किया था संध्याकाल के समय [उत्तर पुराण], इसलिए दिवाली बहुत ही महत्वपूर्ण जैन पर्व है !

Jainism existed before Lord Mahaveer, he's one of the supreme teachers (Tirthanakar) and a reformer but due to ignorance of scriptures, manuscripts & history misconception he's considered as founder.

जैन धर्म महावीर भगवान से पहले भी अस्तित्व में था, महावीर भगवान प्रधान गुरु श्रमण तीर्थंकर तथा संशोधक थे , पर धर्मपुस्तक, पाण्डुलिपि, इतिहास, विवरण भ्रांति की अज्ञानता के कारण महावीर भगवान को जैन धर्म का संस्थापक मान लिया गया है ! हलाकि कुछ वर्षो में इसमें संशोधन भी किया गया है !

Diwali was first referred in Harivamsha Purana (Holy Book of Jainism) written by Acharya Jinasena as dipalika (splendour of lamps). In his words the gods illuminated Pavagiri by lamps to mark the occasion. Since that time, the people of Bharat celebrate the famous festival of Dipalika to worship the Jinendra (i.e. Lord Mahavira) on the occasion of his nirvana:

ततस्तुः लोकः प्रतिवर्षमादरत् प्रसिद्धदीपलिकयात्र भारते |
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्र-निर्वाण विभूति-भक्तिभाक् |२० | [Harivansha Purana]

दिवाली के बारे में सबसे पहले हरिवंश पुराण में उल्लिखित मिलता है जो आचार्य जिनसेन जी ने लिखा है : दिपालिका [दीपक की ज्योति], पावगिरी दीपक की ज्योति से प्रकाशित होगई थी,

भगवान के कारण से , इस कारण से निर्माण होने से भारत की जनता ने दिपलिका पर्व उत्सव जिनेन्द्र भगवान [महावीर भगवान] की पूजा करके विशेष मनाया !

Dipalikaya roughly translates as "light leaving the body". Dipalika, which can be roughly translated as "splendiferous light of lamps", is used interchangeably with the word "Diwali".

.....

Unique way of celebration: Jains as a religion gives more stress on simplicity. Unlike other religious practices in India, who celebrate Diwali with lots of fire crackers, noise, songs and dances, Jainism follows a different form of celebration altogether. To them, physical triumph and pomp are just worldly emotions of joy and gratification. In many temples special laddus [a type of sweet] are offered particularly on this day. On 21 October 1974 the 2500th Nirvana Mahotsava was celebrated by the Jains throughout India.

.....

On that day Mahavir attained mancipation and relinquished this universe forever. He sat on the deat of salvation. He will never return from there. His emancipation caused extinguishes of Bhav Deepak and turned the atmosphere into darkness and hence those who were present at that time lighted Dravya Deepak. Dipavalee festival since then commenced for Jains. It is celebration of NIRVANA KALYANAK and not enjoyment of worldly pleasures. Why? Because we wish to have NIRVANA as early as possible.

कार्तिक कृष्णा अमावस के प्रत्यूष बेला के समय में महावीर भगवान ने मुक्ति प्राप्त की तथा हमेशा के लिए संसार छोड़ दिया, वे मोक्ष के विराजमान होगये , अब वे कभी संसार में वापस नहीं आएंगे , उनके मुक्ति के कारण से भाव दीपक मन्द हो गए , तथा वातावरण अंधकार में बदल गया , इस वजह से वो वह पर मोजूद थे उन्होंने द्रव्य दीपक जलाये, तब से दिपलिका पर्व जैन धर्म में मानना आरम्भ हुआ, ये निर्वाण कल्याणक का उत्सव है , ना की संसारी सुख का , क्यों ? , क्योंकि हम भी जल्दी से जल्दी निर्माण प्राप्त करना चाहते है

.....

NOTE: Dhanya Triyodashi [Dhanteras]: Yes, Jainism has significance of Dhayna Triyodashi [Dhanteras], due to ignorance this day we worship of Dhan Lakshmi, It is actually Dhayna Triyodashi because it was the last day of divya dhwani & Samvsharan. Yog nirodh can last for several days, one day or a few seconds depending on the karmas of the tirthankar.

धन्य त्रियोदशी [धनतेरस] जी हा !, जैन धर्म में धन्य तेरस का बहुत महत्व है लेकिन वैसा नहीं जैसा हम लोग मानते है की लक्ष्मी तथा धन का पूजा करो नहीं, जिस दिन भगवान महावीर की दिव्या ध्वनि अंतिम दिन खीरी थी उस दिन त्रियोदशी थी, इस लिए उस दिन को

धन्य माना गया क्योंकि उस दिन के बाद भगवान ने योग निरोध किया तथा अमावस्या को मोक्ष प्राप्त कर लिया, लेकिन समय से प्रभाव से यह धन्य त्रयोदशी - धनतेरस में फिर सिर्फ धन की पूजा होने लगी !

गणानां ईशः गणेशः, गणधर: - यह प्रयायेवाची नाम श्री गौतम स्वामी की ही है, सब लोग बात को न समझ कर गणेश, लक्ष्मी की पूजा करने लगे, वास्तव में गणधर देव, केवलज्ञान महालक्ष्मी की पूजा करने चाहिये

Dipak is a symbol of light of attainment [kewalgyan rupi jyoti] & we've to abolition of darkness fascination to get complete knowledge (Kevalgyana).

दीपक केवलज्ञान रूपी ज्योति का प्रतिक है , हमको अंधकार रूपी मोह का नाश करना है केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए...

NOTE: We should do Mahavir Swami's and Gautam Swami's puja - lakshmiji or ganpatiji's puja is not in Jainism, Actually first we've to reach on conclusion of worship of laxmi & ganesh , Laxmi puja means Moksha Laxmi not worldly laxmi & Ganesh means Gano me Esh [Gandharo me Sabse Bade] means Goutam Gandhar ji ke puja na ki Ganesh [worldly]. Yeh grahit mithyatva badhata hai

हमें महावीर भगवान - मोक्ष लक्ष्मी तथा गौतम स्वामी - गणों में ईश की पूजा करने चाहिये, जो हम लोकिक गणेश तथा लक्ष्मी पूजा करते है वो जैन धर्म में नहीं है, इस बारे में हम शास्त्रों तथा ग्रंथो से पढ़ सकते है तथा मुनिराज से इस बारे में पूछना चाहिये , अन्यथा यह गृहीत मिथायात्व कर्मबंध होता है !

.....

जब चतुर्थकाल पूरा होने में 3 वर्ष 8 माह बाकी थे, तब कार्तिक अमावस्या के दिन सुबह स्वाति नक्षत्र के दौरान स्वामी महावीर अपने सांसारिक जीवन से मुक्त होकर मोक्षधाम को प्राप्त कर गए. उस समय इन्द्र सहित सभी देवों ने आकर भगवान महावीर के शरीर की पूजा की और पूरी पावानगरी को दीपकों से सजाकर प्रकाशयुक्त कर दिया. उस समय से आज तक यही परम्परा जैन धर्म में चली आ रही है और इसी कारण जैन धर्म के अनुयायी इस दिन प्रतिवर्ष दीपमलिका सजाकर भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मानते हैं. इसी दिन शाम श्री गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी.

.....

अज्ञानता के कारण से दशहरा पर रावण, मेघनाथ , कुम्भकर्ण के पुतले जलाये जाते है , भाई आप लोग इनको जलते हुए देखने जाते है है तथा ख़ुशी मानते है जरा सोचो तो. मेघनाथ , कुम्भकर्ण तो मोक्ष गए है वो तो भगवान है और हम उनके पुतले जलते देख कर खुश हो रहे है जो मोक्ष में विराजमान है, रावण का जीव भविष्य में २३वा तीर्थंकर होगा... कितना भारी पाप बांध होगा जलता देखने पर ....ओह...!

.....

Diwali devoid of firecrackers: Harm Effect Of Firecrackers Commonly Is Visible Plenty At Worthily & Then What Would Be Indirect Affects Us Can't Imagine Just Have To Think Before Fire To A Sky shoot Or Bomb…

Let each one of us take a pledge this Diwali to say NO to firecrackers and invest in a safer and greener future. Diwali is the festival of lights and we must enlighten our lives with the sparkle of joy and goodwill, forget past grievances and look ahead towards a brighter and happier future.

Come Diwali and one can hear the sounds of firecrackers exploding from all directions. People of all age groups are fascinated with firecrackers, which form a prominent part of the Diwali celebrations. Firecrackers are known to cause air pollution as well as noise pollution and are extremely harmful for senior citizens and small children.

"Pets such as dogs and cats also suffer on account of firecrackers as animals have a more sensitive sense of hearing than humans." It is important for each one of us to act as responsible citizens and discourage the use of firecrackers.

Firecrackers can cause hearing loss, high blood pressure, sleeping disturbances and sudden exposure to loud noise can cause temporary or permanent deafness or even result in heart attack. Nausea and mental impairment are also some of the side effects of firecrackers.

According to People for the Ethical Treatment of Animals (PETA), a non-profit organization, awareness should be created for the masses. People need to understand that bursting firecrackers is not trendy anymore. It is important for the government to organize anti-firecracker campaigns and discourage people from bursting firecrackers.

पटाके जलाना जिनेन्द्र देव की वाणी का अपमान है ! क्योंकि

"अहिंसा परमो धर्मः"

SAY "NO" TO "FIRECRACKERS"

वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहा, मार्ग बताया है जो जग को कह न सके कोई और यहाँ